बालभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – पंचम् **दिनांक -12-10-2020**

विषय – हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -13 जोजी – रिजल प्रेमचंद की लिखी दुर्लभ जीवनी के बारे में अध्ययन करेंगे।

' जोजी रिजल' उन आदमियों में था,

जिनके जीवन की सबसे बड़ी हार उनकी

सबसे बड़ी जीत होती है।

एशिया में फिलिपाइन-द्वीपसमूह तो तुमने

सुना ही होगा। पहले यह द्वीप स्पेन वालों के

अधिकार में था। अब उस पर संयुक्त

अमरीका का राज्य है। वहां के लोग अपना

असली धर्म, असली भाषा, सब त्याग करके

स्पेन का धर्म मानते हैं और स्पेन की भाषा

बोलने तथा लिखते हैं। धर्म, भाषा,,

रहन-सहन, सब-कुछ बदल डालेन पर भी

स्पेन ने उन लोगों को स्वराज्य नहीं दिया।

रहे थे और स्पेन सरकार कभी वादे करके कभी आपस में फूट डालकर और कभी कठोर नीति से उन लोगों को कुचलती रहती थी।

अंत में वहाँ एक ' गाधी' का अवतार हुआ। उसी ' गांधी' का नाम ' जोजी रिजल' था।

जोजी रिजल अपने देश की दुर्दशा पर बराबर आंसू बहाता रहता था। विदेशियों के हाथों अपने भाइयों की हत्या, बहना का

अपमान और नीति का खून होते देखकर उसे असीम दुख होता था। उसने सुधार के लिए युवकों की संस्थाएं बनाईं, समाचार-पत्र

निकाले और व्याख्यानों द्वारा जनता को जगाने लगा। गांधी ही की भांति वह भी प्रजा को शांत रहने के लिए कहा करता था।

स्पेन-सरकार को उसके ये प्रयत्न भयंकर मालूम हुए। उन्होंने उसको पकड़कर कैद कर देना चाहा। उसको यह खबर मिल

गई। वह चुपके से भाग निकला और फ्रांस पहुंचकर कानून पढ़ने लगा। उसकी बुद्धि इतनी तीव्र थी कि उसने 2-3 सालों में ही

विज्ञान दर्शन चिकित्सा आदि कई शास्त्रों की सनद हासिल कर ली।

फ्रांस ही में उसने एक उपन्यास लिखा। इसमें उसने उस अन्याय का चित्र खींचा, जो स्पेन वाले उसके देश पर कह रहे थे।

पुस्तक एक सच्ची घटना के आधार पर लिखी गई थी। पुस्तक की भाषा, शैली और चित्रण इतने सजीव थे कि फिलिपाइन में घर-घर

उसकी चर्चा होने लगी। स्पेन-सरकार ने तुरंत ही पुस्तक का फिलिपाइन में आना बंद कर दिया। मगर लोग उस पुस्तक के लिए इतने

उत्सुक हो रहे थे कि चोरी से कपड़े की गांठों में वह लाई जाती थी। लोग छिप-छिपकर उसे पढ़ते थे और रोते थे।

इस उपन्यास के प्रचार से ' जोजी' का दिल और बढ़ा। उसने एक दूसरा उपन्यास लिखा, जो पहले से भी सुंदर था। वह भी